* श्रीमदाद्यशङ्कराचार्य *

भगवत्पाद आद्य शंकराचार्य जहाँ अद्वैतवेदान्तदर्शन के आचार्य माने जाते हैं, वहीं वे महामाया आद्याशक्ति त्रिपुराम्बा के भी उत्कृष्ट कोटि के उपासक रहे हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण उनके विभिन्न पीठों में चन्द्रमौलीश्वर भगवान शङ्कर के साथ पराम्बा त्रिपुरसुन्दरी की उपासना का उपक्रम आज भी अविच्छिन्न रूप में चलते रहना है। बौद्धों द्वारा प्राचीन आगम-तन्त्रशास्त्र को अस्त-व्यस्त और नष्ट कर देने पर उसको पुनः सुप्रतिष्ठित करने के लिये आचार्य शंकर ने दक्षिणमार्गी श्रीविद्या-उपासना का सम्प्रदाय प्रवर्तित किया और आज की श्रीविद्योपासना उन्हीं की परम्परागत शिष्य परम्परा से संरक्षित और सम्पोषित होती चली आ रही है। 'श्रीविद्यार्णव' के रचयिता श्रीविद्यारण्य यति उन्हीं की परम्परा के हैं। श्रीशङ्कराचार्य का तन्त्रशास्त्र का सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'प्रपंचसार' है, जिसमें उन्होंने शक्ति के अनेक रूपों पर अद्‌भुत प्रकाश डाला है। आचार्यश्री ने 'सौन्दर्यलहरी' द्वारा पराम्बा के प्रति अपनी जो अनन्य भक्तिव्यक्तकी है और श्रीविद्यापासनासम्बन्धी जो अनेक रहस्य प्रकट किये हैं, यह उनका श्रेष्ठतम शक्ति-उपासक होना सुस्पष्ट कर देता है।

भगवत्पाद ने आज (२०५६ वि.) से लगभग २५१० वर्ष पूर्व युधिष्ठिर शक संवत् २६३१ बैशाख शुक्ल पञ्चमी से युधिष्ठिर शक संवत् २६६३ कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा ई. सन् पूर्व ५०७-४७५ में केरल प्रदेश के कालटी नामक ग्राम में पिता शिवगुरु तथा माता आर्याम्बा से अवतार ग्रहण किया था। अप्रतिम मेधा के धनी आचार्य शङ्कर ने आठ वर्ष की अवस्था में चारो वेद पढ़ लिये तथा बारहवें वर्ष में सर्वशास्त्रों में पारंगत होकर सोलहवें वर्ष में ब्रह्मसूत्रपर शांकरभाष्य लिखा एवं बत्तीसवें वर्ष में गुहाप्रवेश किया। पराम्बा श्रीविद्या के उपासकों के लिये इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। सचमुच ही आचार्य-चरण-द्वारा उपासकों को दक्षिण-मार्गीय श्रीविद्या-सम्प्रदाय का प्रदान बहुत बड़ा उत्स है।